समझाया जा रहा है। हमें जब भी जो कुछ भी कभी भी समझना हो, All time 24 hrs. हमारे पास विद्वत जनों के प्रवचन Internet पर उपलब्ध है। हमें चाहिए कि हम उसका अच्छे से सदुपयोग करें। Jainism के values को पढ़ करके कैसे व्यक्तित्व विकास किया जा सकता है, ऐसी विशेष कक्षाएँ होनी चाहिए।
इन कक्षाओं में ऐसी बातों पर जोर दिया जाना चाहिए कि बच्चा किस प्रकार situations को handle करे और कभी परिस्थितियों से भागे नहीं, उसका सामना करे, comparision कभी भी दूसरों से न करे अपने आप से करे। इस प्रकार गति विधियाँ चलनी चाहिए। इस प्रकार की शिक्षाएँ पाठशालाएँ आदि में देनी चाहिए।

उपसंहार :-

इस प्रकार पाठशालाओं को आधुनिकतम माध्यमों से चलाना चाहिए जिससे कि बच्चों को practical ढंग से जैन धर्म का महत्व समझ में आए। इसमें समाज, अभिभावक, अध्यापकों को सर्वांगीण भूमिका निभानी चाहिए।

Scanned by TapScanner

यह सच है कि संस्कार बिना सुविधाएँ पतन का कारण है। आज इस भौतिक युग में माता-पिता अपने बच्चे की हर मांग को पूरी करते है लेकिन बच्चों को संस्कारित नहीं करते और जब वे माता पिता के बच्चे बड़े हो जाते है, तब उन्हें संस्कार की किमत आती है। एक ऐसी जगह जहाँ बच्चे संस्कारित हो सके, अर्थात् क्या सही और क्या गलत, ऐसी जहाँ पहचान कराई जाए, जिसका एक मात्र उद्देश्य यही हो, वह जगह है 'पाठशाला'। यह एक ऐसी जगह है जहाँ पर बच्चों को कहानियो के माध्यम से, पाठ आदि के माध्यम से संस्कारित किया जाता है, सदाचार मयी जीवन जीना सिखाया जाता है। यह सब किसके द्वारा सिखाया जाता है? यह सब 'अध्यापक' के द्वारा सिखाया जाता है।

- पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएँ

अध्यापक ऐसा होना चाहिए जो बच्चों को समझ सके, अपनी ओर आकर्षित कर सके। यदि अध्यापक बच्चों को किसी चीज़ का पालन करने के लिए कह रहा है तो उसे भी चाहिए कि वह भी उस चीज़ का पालन करे। आज कल तो बच्चे English Medium मे पढ़ते है तो अध्यापक भी वैसा हो जो किसी भी चीज को english में समझा सके और वैसे भी यह तो technology का जमाना है तो बच्चे भी

Scanned by TapScanner

के द्वारा पढ़ना ज्यादा पसंद करते है।
technology
और अध्यापक भी वैसा हो जिसको इन technologies
के बारे में ज्यादा knowledge हो, इसी प्रकार का
सरल स्वभावी अध्यापक होना चाहिए।
वह अध्यापक वर्तमान समय के अनुसार किस तरह
से बच्चो को पढ़ाए।
वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए:-
वर्तमान समय मे technology की बहुत emphasis है।
बच्चों को technology के माध्यम से पढ़ाया जानी
चाहिए। हमारे जैन धर्म की कहानियां भी
आज कल internet पर उपलब्ध है तो visuals के
through बच्चे जल्दी समझ लेते है, क्योंकि कोई
भी चीज़ को practically देखते है तो वह चीज़
ज्यादा जल्दी और अच्छे से समझ आती है
साथ ही उनका interest भी develope होता है।
पाठशाला के पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों के लिए
उस पाठ्यक्रम संबंधी प्रतियोगिता आयोजित करनी
चाहिए। जिससे जो कुछ भी उस बच्चे ने पढ़ा
वह सब उसे समझ आ जाता है। बच्चों को
नए - नए काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए
उनका उत्साह वर्धन करना चाहिए। धार्मिक तीर्थ
क्षेत्रों की trips आयोजित करना चाहिए, जिससे की
बच्चे जान पाए उस तीर्थक्षेत्र के बारे में।
उदाहरण के तौर पर हम देखे कि जैसे अभी
अहिंसा पाठशाला अपना कार्य कर रही है, घर बैठे
रोचक ढंग से जैनधर्म के गूढतम सिद्धान्तों को

Scanned by TapScanner